International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 326-328

अमरकवि प्रणीत श्रीकीर्तिकाव्य में शक्ति–शक्तिमानस्वरूप श्रीराधा–कृष्ण तत्व विमर्श

पिंकेश दाधीच
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, राज. विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

''सर्वश्रुतिशिरोजुष्टं सर्वश्रुतिमनोहरम्।
सर्वश्रुतिरसाश्लिष्टं श्रौतं श्रीकृष्णमाचश्रये।।''

निश्चय ही मातृशक्ति के बिना इस सकल चराचर जगत की कल्पनामात्र भी अकल्पनीय, अविचारणीय, अचिंतनीय है। वेदादि आरम्भ्य विविध दर्शनों सहित सकलज्ञाननिधिसमूह प्रकृति–पुरुष के बिना जड़ चेतन संसार की उत्पत्ति असंभव मानते है। अत एव श्री अर्थात् मातृशक्ति युक्त होकर ही अखिल ब्रह्माण्डपति, सकलजगत्–पालक, सृष्टि–संहारक, षोडशकलाधीश, अष्टसिद्धि–षडैश्वर्यसम्पन्न परब्रह्म परमात्मा भगवन् 'कृष्ण' का स्मरण किया जाता है, यतोहि–

''राधाकृष्ण स्वरूपं वै कृष्णराधास्वरूपिनम्।
कलात्मानौ निकुजस्थं गुरूरूपं सदाभजे।।''

चराचर जगत्स्वामिनी भगवती श्री राधा परब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण की अनन्या सहधर्मिणी है, जो अंग–अंगीभाव से तद्रूप हो उन्हीं में निवास करती है। 'श्री' शब्द परब्रह्मशक्ति–स्वरूपिणी 'राधा' शक्ति का वाचक है, इन्हीं से श्रीयुत् होकर कृष्ण 'शक्तिमानत्व' प्राप्त करते हैं। राधा–कृष्ण का संगम शक्तिशक्तिमान के सम्बन्ध को इंगित करता है जिससे जड़चेतनाभूत प्रकृति प्रवृत्त होती है। 'राध्नोति साधयति कार्याणि'' व्युत्पत्यानुसार शक्तिस्वरूपा श्रीराधा शक्तिस्वरूप श्रीकृष्ण से एकीभाव होकर समस्त स्थूलादि प्रपंच कार्यो को सिद्ध करती है। राधा शब्द स्वयं में ही प्रकृति पुरुष का द्योतक है जिसमें 'रा' पद परब्रह्म महाविष्णु–नारायणरूप श्रीकृष्ण का तथा 'धा' पद सकल जगत् को धारण करने वाली मातृशक्ति, जगज्जननी, जगत्पालिनी शक्ति का वाचक है। देवी भागवत में ''राध्नोति सकलान् कामान् तेन राधा प्रकीर्तितः'' कहकर भगवती श्रीराधा को सकलमनोरथपूर्णा, पूर्णशक्तिस्वरूपा संज्ञा से अभिहित किया गया है।
अमरकविकृत भक्तिकाव्य ''श्रीकीर्तिकाव्य' श्रीराधाकृष्ण की अन्योन्य शक्तिरूप में प्रतिष्ठापना करता है। यथा सूर्य का तेजत्व, वायु का स्पर्शत्व, जल का शीतत्व, अग्नि का दाहकत्व, दुग्ध का धवलत्व अभेद है, उसी प्रकार श्रीराधा–कृष्ण भेदाभेद रहित एकतत्व है। दोनों एक ही शक्तिस्वरूप पुंज के अंश है। एक के बिना दूसरा निर्जीव एवं अप्रकट है। दोनों एकत्वभूत अद्वैत होकर परब्रह्म भगवान पद प्राप्त करते है। अभेदस्वरूप श्रीराधा–कृष्ण को ही परमात्मरूप भगवान जानकर तत्वविद् वन्दना करते है, जैसा कि श्रीमद्भागवत् में कहा गया है–

''वदन्ति तत्तवदिस्तत्वं यज्जानमद्वयम्।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवनिति शब्द्यते।।''
(श्रीमद्भाग. 1/2/11)

श्रीकीर्तिकाव्य में भगवती श्रीराधा को जीवप्रदायिनी शक्तिरूप में अभिहित कर अमृतपत्नी अर्थात् विष्णुपत्नी रूप में ऋग्वेद, तैत्तरीयोपनिषद् में स्तुत्य बताया गया है, यथा–

''ऋक् तैतरीया वदतीह राधो,
गर्तेतितेयामृतस्य पत्नीम्।।''
(1/49 श्रीकीर्ति.)

श्रीकीर्तिकाव्य श्रीराधाकृष्ण दोनों शक्तितत्वों को परस्पर सेवा एवं स्तुत्यभाव युक्त स्वीकार कर जहाँ एक ओर मोक्षदायी, जगत्पितामहपिता भगवान् श्रीकृष्ण को अहर्निश अनवरत भगवती श्रीराधा का स्मरण करते हुये शक्तिमत् बतलाता है वहीं दूसरी ओर सहधर्मिणी रूप में 'व्रजांगना नेत्र चकोर चातुरी' भगवती श्रीराधा को निरन्तर दासीभाव से श्रीकृष्ण की चरणसेवा में प्रस्तुत करता है, यथा–

''चराचराणां पितामहादयो,
निदानमेकं विबुधा वदन्ति यम्।
त्वां राधिके ध्यायति सोऽनिशं हरिः,
किमस्ति सौभाग्यमतःपरं भुवि।।
(श्रीकीर्ति. 1/13)

''यस्या सकृत् सहज साधुविलोकनेन,
विश्वं विभूति वलितं विरराज विष्वक्।।
दासीव सेवनपरा चरणे यदीये,
सा वै सुधाब्धि तनया जलजायताक्षी।।
(श्रीकीर्ति. 7/47)

यद्यपि अखिल ब्रह्माण्ड श्रीकृष्णमय होकर, उनमें ही प्रतिष्ठित, उनके ही अधीन प्रतीत होता है। समस्त जगत् के कार्य भगवान कृष्ण की माया का ही प्रतिफल स्वीकार किये जाते है, तथापि वें कामनाओं के पूरक, आत्मस्वरूपस्थ, त्रिगुणातीत परब्रह्म श्रीकृष्ण भी शक्तिस्वरूपा होकर श्रीराधा के ही वश में है अर्थात् उनके ही अधीन है। श्रीराधा से युक्त होकर ही वें शक्तिमत्व को धारण कर उक्त कार्यो में प्रवृत्त होते है। यथा–

''आत्मस्वरूपः परिपूर्णकामः
पदार्थमात्रेप्यनुरागशून्यः।।
वशेयतः श्रीपुरूषत्तमोऽपि,
प्रवर्वते साऽपि किलात्र सिद्धिः।।''
(श्रीकीर्ति. 3/46)

श्रीराधा के गुणों एवं शक्तियों को सहस्रमुखों से भी कहना संभव नहीं है यथा–

''यस्याः गुणान् वक्तुमनीश्वराहं।''

मुखैः सहस्रेरपि नीरजाक्ष्याः।।''

(श्रीकीर्ति. 4/5)

उन्हीं भगवती श्रीराधा एवं कृष्ण के नामों का स्मरण संयुक्त भाव से, अद्वैत रूप में विविध रूपों वाले पक्षीगण विविध ध्वनियों से युक्त होकर करते है यथा–

''वरैर्विरावेर्वयसां निनादितां,
विचित्र नानाविधरूपशालिनाम्।
राधेति कृष्णेति वचोभिधायिनां,
क्वचित् क्वचित् संस्कृतगीः प्रवादिनाम्।।''

(श्रीकीर्ति. 5/1)

कृपाकारिणी श्रीराधाशक्ति के स्पर्शमात्र से प्रत्येक वस्तु अनन्त सौन्दर्य को प्राप्त कर लेती है, प्रत्येक स्पर्शित वस्तुमात्र में श्रीवृद्धि हो जाती है जो भगवती राधा के पराशक्तित्व को द्योतित करती है यथा–

''श्रीराधिका ते दुहिता स्वभावतः,
करेण यद्वस्तु भुवीह संस्पृशेत्।
प्रभाति तत् सुन्दरतामनंततां,
तथानुभूतं च मया सहस्रशः।।''

(श्रीकीर्ति. 5/24)

श्रीराधाकृष्णतत्व मन, वाणी से भी अप्राप्य है अर्थात् 'यतो वाचा निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' श्रुतिवचनानुसार ही उस परमतत्व से मन –वाणी पुनः लौटकर आ जाते है, जिन्हें अनेकानेक प्रयासों से भी जाना–जाना दुष्कर है, इस प्रकार का वह परब्रह्म तत्व है, यथा–

''मनोऽपि न प्राप्य यतो निवर्तते,
कथात्र का नाम गिरो गिरीडिते।
विदां वरै बोध्यत एव यत्नतो,
गणैः श्रुतिनामपि योऽवशेसते।।''

(श्रीकीर्ति. 1/12)

इस प्रकार यथा शिव शक्ति के बिना, इन्द्र शची के बिना, विष्णु लक्ष्मी के बिना एवं राम सिया के बिना अपूर्ण है, उसी प्रकार शक्तिस्वरूपा श्रीराधा के बिना श्रीकृष्ण शक्तिहीन है। दोनों का शक्तिमत्व एक दूसरे से अभेद्य होकर ही निहित है। राधाशक्ति अपनी अनन्या विशाखा, अनुराधा, चित्रा, ज्येष्ठा आदि नक्षत्ररूपिणी सहशक्तियों के साथ ब्रह्माण्ड को सुशोभित करती है वहीं श्रीकृष्ण इन शक्तियों से युक्त होकर ब्रह्माण्ड नियन्ता, पथप्रदर्शक, जगत्सूर्य रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। इस प्रकार दोनों शक्तितत्व एक ही है जो प्रधानानप्रधानरूप में एकाश्रित है यथा–

''अद्वितीय तत्व एक है, राधा तत्व प्रधान।
जाको दूजो रूप है, स्वयं कृष्ण भगवान।।''

अमरकवि प्रणीत श्रीकीर्तिकाव्य में गोपी कलावतीस्वरूप भगवान् शिव भी रसपूर्णा रसेश्वरी श्रीराधाशक्ति सहित परिपूर्णकाम रसराज श्रीकृष्ण की शरण में जाते है।

नमो नमस्ते रसराज देव, प्रभाप्रकाशीकृत मारमूर्ति।
विभोरसो वै स इति श्रुतिस्त्वां प्रगायतीति प्रथितं पृथिव्याम्।।

(श्रीकीर्ति. 1/31)

मूर्तोऽसि नाथ विभुरप्यनिशं भवारे,
कामीव भासि सततं परिपूर्णकामः।
आत्मावबोध निरतोऽपि नतानुभागे,
श्रीमंस्त्वमेव हि हरे शरणं ममसि।।

(श्रीकीर्ति. 1/32)

श्रीराधाकृष्ण के एकमतशक्तित्व की कृपा से अत्यन्त तुच्छ वस्तु भी श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेती है यथा सरसों का एक कण मात्र प्रभुकृपा से सुमेरूपर्वत जितना भारी हो सकता है अथवा उस अत्यन्त गुरुत्तम पर्वत को उठाने में पिपीलिका भी समर्थ हो सकती है–

सुमेरुसारोऽपि धुरा यदिच्छया,
गिरिद्रुतं सर्षपसन्निभो भवेत्।
अहो तमाकर्षयितुं स्वलीलया
पिपीलिकाऽपि ध्रुवमीश्वरी भुवि।।

(श्रीकीर्ति.3 /42)

श्रीराधाशक्तिमत् उन परमात्मा श्रीकृष्ण को सर्वदा परब्रह्मपरमात्मा रूप में निश्चित् कर योगियों द्वारा पूजा जाता है, तथा चूंकि कवि राधाशक्तियुक्त गोवर्धनधारक श्रीकृष्ण को जगत्पितामहपितारूप में प्रतिष्ठित करते है अतः उनकी ही आज्ञा के वशीभूत बने हुये शैव, महेश, विरंचि आदि देव कहे जाते है।

सदा परब्रह्मतयापि निश्चितो,
निगद्यते योगिगणैर्महेश्वरः।।

(श्रीकीर्ति. 1/15)

यत्पादाब्जजलं विभर्तिगिरिशो मौलोस्वकीय सदा,
यन्नामैति नवं नवं फणिपतेर्जिह्वासहस्रद्वयम्।
भानुर्भ्राम्यति सन्ततं सुखकृते लोकस्य यस्याज्ञया,
सोऽयं चास्ति जगत्पितामहपिता गोवर्धनोधारकः।।

(श्रीकीर्ति. 1/2)

जगत्पालक परब्रह्म श्रीकृष्ण स्वयं स्वीकारते है कि भगवती श्रीराधिका का ऐश्वर्ययुक्त श्रीमुख दर्शन ही परमात्मा को जगत्कल्याण करने हेतु सन्नद्ध करता है। अतः उन शक्तिस्वरूपा वृषभानुनन्दिनी श्रीराधिका के मुखचन्द्र दर्शन मात्र से तथा उनकी दृष्टिमात्र से मैं राजा स्वरुप अर्थात् शक्तिमत्व स्वरुप को धारण करता हूँ–

ऐश्वर्यमस्ति कियदेतदहो तवास्य,
श्रीमन्मुखस्य मदिराक्षि वयं न विद्मः।
बध्यात्यनंगजनकं हि मनोभिधानं,
तस्मै जगत्त्रयजयाय कृपां करोति।।

(श्रीकीर्ति. 9/39)

उच्चस्थिते दिनगतेप्यथ केवलेऽपि,

गुर्वादि दृष्टिरहितेऽपि भवेयमिन्द्रः।
राजा भवामि च तनौ यदि दृग् यदीय,
तस्य त्वदीय वदनस्य समः किमिन्दुः।।

(श्रीकीर्ति. 9/45)

फलतः श्रीकृष्ण संसार को मोहित करते है तथा त्रिदेवियों से भी अन्यतमा श्रीराधा उन्हें मोहित करती है, यथा–

''ममेदं श्रीराधे रसनदि परप्रेम रसिके,
त्वदीयं सौन्दर्यं विगलयति सर्वेस्मृतमपि।
इदानीं देहि त्वं झटिति मम संदर्शनमये,
रमागीगौरीणामपि महमते मोहनतरम्।।''

(श्रीकीर्ति. 3/28)

संक्षेपतः श्रीराधाशक्तिस्वरूपा आद्याशक्ति है जिनकी पदरज को मस्तक पर धारण कर श्रीकृष्ण शक्तिमानत्व संज्ञा से सुशोभित होते है यथा–

''यस्यारेणुं पादयोर्विश्वभर्ता, धरते मूर्धिनः प्रेमयुक्तः।।''

तथा इसी प्रकार पत्नीधर्मा लक्ष्मीरूपा श्रीराधा को वामांग में धारण कर भगवान् श्रीकृष्ण समृद्धि सौन्दर्य से युक्त हो नक्षत्रादिभूत ब्रह्माण्ड को धारण करते हैं यथा–

''श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे,
नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्याप्तम्।।''

(शु. यजु.)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्रीकीर्तिकाव्यम्(मूल पाण्डुलिपि) – अमरकवि।
2. कृष्णभक्तिकाव्य – डॉ. जगदीश गुप्त।
3. गर्गसंहिता (प्रियंवदाभाषा टीका) – पं. रामतेज पाण्डेय।
4. श्रीमद्देवीभागवतम् (पीताम्बराभाषा टीका) – पं. रामतेज पाण्डेय।
5. श्रीमद्भागवतम – गीताप्रेस, गोरखपुर।
6. भागवत सम्प्रदाय – बलदेव उपाध्याय।
7. उपनिषत्संग्रह – जगदीश लाल शास्त्री।
8. संस्कृत हिन्दी शब्दकोष – वामन शिवराम आप्टे।
9. वाचस्पत्यम् महाशब्दकोश – तर्कवाचस्पति तारानाथ।